परिणाम बजट 2012-13

अध्याय -VI

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सांविधिक तथा स्वायत्त निकायों के निष्पादन की समीक्षा

संस्कृति मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन 33 स्वायत्त/सांविधिक निकाय हैं। इन 33 संगठनों में से देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेड सी सी) हैं। ये स्वायत्त/सांविधिक निकाय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य रहे हैं, नामतः संग्रहालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, मानव विज्ञान, मंच कला तथा साहित्यिक कलाएं, बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन, अभिलेखीय पुस्तकालय स्मारक आदि। गत दो वर्षों अर्थात् 2010-11 और 2011-12 (दिसम्बर, 2011 तक) के लिए इन संस्थानों के निष्पादन की समीक्षा करने पर संस्कृति मंत्रालय ने यह पाया है कि ये स्वायत्त संगठन अपने संबंधित क्षेत्र में तीव्र निष्पादन के साथ उद्देश्यों और लक्ष्यों, जिनके लिए इन्हें स्थापित किया गया है, की प्राप्ति में सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

कला और संस्कृति का संवर्धन और प्रचार-प्रसार

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेड सी सी)

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के सृजनात्मक विकास में कार्यरत है। संस्कृति मंत्रालय ने देश के विभिन्न भागों में सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र स्थापित किए हैं। ये केन्द्र हैं (i) पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (ई जेड सी सी), कोलकाता (ii) उत्तर मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन सी जेड सी सी), इलाहाबाद (iii) पूर्वोत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन ई जेड सी सी), दीमापुर (iv) उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एन जेड सी सी), पटियाला (v) दक्षिण मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एस सी जेड सी सी), नागपुर (vi) दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (एस जेड सी सी), तंजावुर तथा (vii) पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक

केन्द्र (डब्ल्यू जेड सी सी), उदयपुर। इन क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों का अनिवार्य बल लोगों में सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने और विभिन्न राज्यों के ग्रामीण तथा अर्द्धशहरी क्षेत्रों में लुप्त हो रहे कलारूपों/परम्पराओं का पता लगाने, सम्पोषण करने तथा संवर्धन करने पर रहा है। मंत्रालय द्वारा सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों के कार्यकलापों की निरंतर निगरानी की जाती है और समय–समय पर समीक्षा की जाती है। इन जेड सी सी द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रमों को आम जनता और विशेषतः संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों से कलाकार समुदाय में बहुत प्रभावी पाया गया है। कार्यक्रम शुरू करने की आत्मनिर्भरता बढ़ाने के उद्देश्य से मंत्रालय ने प्रत्येक जेड सी सी को उसकी प्रारंभिक अक्षय निधि के रूप में 5 करोड़ रुपए प्रदान किए थे। 10वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान प्रत्येक जेड सी सी के लिए 5 करोड़ रुपए की और अक्षय निधि बढ़ा दी गई है। मंत्रालय राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम, गुरू–शिष्य परंपरा, रंगमंच सुदृढ़ीकरण, लुप्त हो रहे कलारूपों के प्रलेखन, शिल्पग्रामों की स्थापना, प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव (लोक तरंग) तथा गणतंत्र दिवस शिल्प मेला जैसी स्कीमों को कार्यान्वित करने के लिए सीधे निधियाँ भी जारी करता है। जेड सी सी ने संगीत नाटक अकादमी के साथ मिलकर पहली बार मार्च 2006 में''ऑक्टेव'' नामक पूर्वोत्तर उत्सव आयोजित किया। 'आक्टेव' उत्सव के दौरान पूर्वोत्तर क्षेत्र के सैकड़ों कलाकार दिल्ली आए और दिल्ली में आयोजित आक्टेव उत्सव में भाग लिया। ''आक्टेव'' का अगला उत्सव मार्च, 2007 के दौरान हैदराबाद में आयोजित किया गया तथा अगला पूर्वोत्तर आक्टेव उत्सव फरवरी, 2008 में तिरूवनंतपुरम में आयोजित किया गया। जेड सी सी द्वारा हैदराबाद में पूर्वोत्तर राज्यों की महिला कलाकारों सहित सैकड़ों कलाकारों तथा कला प्रस्तुतकर्त्ताओं की भागीदारी से नवम्बर तथा दिसम्बर, 2008 में गोवा, मुम्बई तथा पटना में संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से उत्सव आयोजित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2009–10 में, सूरत में पूर्वोत्तर उत्सव ''आक्टेव'' आयोजित किया गया और 2010–11 में पूर्वोत्तर का उत्सव ''ऑक्टेव'' सोलन (हिमाचल प्रदोश) में आयोजित किया गया और यह उत्सव वित्तीय वर्ष 2011–12 के दौरान फरवरी, मार्च 2012 के दौरान आयोजित किया जाएगा। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान, जेड सी सी के समग्र निष्पादन को काफी प्रभावी पाया गया है। मंत्रालय द्वारा समय–समय पर सातों क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों के कार्यकलापों की बारीकी से मानीटरिंग एवं समीक्षा की जाती है।

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी)

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) संस्कृति मंत्रालय का एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना 1979 में की गई थी। सीसीआरटी का मुख्य बल देशभर में सेवाकालीन शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों तथा विद्यार्थियों के लिए विविध प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके सभी विविध कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के संस्कृति के महत्व के बारे में जागरूक बनाने पर हैं। सीसीआरटी ने वर्ष 2010–11 के दौरान छात्रवृत्ति धारकों के लिए चार सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन किया। इसने समीक्षाधीन वर्षके दौरान 10–14 वर्ष के आयु समूह में उत्कृष्ट बच्चों के मंच तथा अन्य कलाओं का अध्ययन करने के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा अनुसंधान छात्रवृत्ति योजना के अंर्तगत 500 छात्रवृत्तियाँ दी। देश के विभिन्न राज्यों में 194 नए सांस्कृतिक क्लबों की स्थापना की गई। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में लगभग 8000 अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों कों प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में लगभग 4600 अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकोंको प्रशिक्षित किया गया तथा देश के विभिन्न भागों में अभिमुखी करण प्रशिक्षण कार्यक्रमों/रिफ्रेशर पाठ्यक्रमों इत्यादि के अंर्तगत 22565 छात्रों को भी प्रशिक्षित किया गया। 200 नए सांस्कृतिक क्लबों की स्थापना की तुलना में दिसम्बर 2011 तक देश में विभिन्न चरणों में 124 ऐसे क्लबों स्थापित किए गए। सीसीआरटी ने स्कूली छात्रों एवं बच्चों के लिए भरतीय कला एंव संस्कृति पर 50 व्याख्यानों का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त दिसंबर 2011 तक पुनः मुद्रण सहित 13 प्रकाशनों का प्रकाशन किया गया। केंद्र की मंत्रालय द्वारा समय–2 पर समीक्षा की गई है और यह पता चला है कि समीक्षाधीन अवधि के दौरान इसने प्रभावी रूप से कार्य किया है।

कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान (के के एफ)

कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान की स्थापना विशेषतः नृत्य और संगीत के क्षेत्रों में भारतीय कला में पारम्परिक मूल्यों के परिरक्षण हेतु एक सांस्कृतिक अकादमी के रूप में रुक्मणी देवी अरून्दले द्वारा 1936 में की गई थी। इस संस्थान के प्रतिबद्ध उद्देश्य सभी कलारूपों तथा उनके क्षेत्रीय रूपों का एकीकरण करना तथा परिणामतः मूल कला के मानक स्थापित करना है। वर्ष 2010–11

के दौरान दिसंबर 2010 के दौरान 58वां वार्षिक कला उत्सव आयोजित किया गया जिसमें कला क्षेत्र रेपर्टरी कंपनी द्वारा रुक्मणी देवी की नृत्य–नाटक प्रस्तुति शामिल है। दिसंबर 2010 में इसने दाताकारी हाट समिति के सहयोग से क्राफ्ट बाजार आयोजन किया। रामायण श्रृंखला के शेष 3 भागों का प्रलेखीकरण कार्य पूरा किया गया। अक्तूबर 2011 में कला क्षेत्र द्वारा 3 दिवसीय स्वानुभव उत्सव आयोजित किया गया जिसमें छात्रों को प्रख्यात संगीतकारों एवं नर्तकों के देखने तथा उनसे बातचीत करने का अवसर मिला। अगस्त 2011 में कलाक्षेत्र फाउंडेशन ने संगीतकारों तथा संगीत के छोत्रों के लिए 'वौइस कल्चर' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। कलाक्षेत्र में 21 और 31 दिसंबर 2011 को 59वां वार्षिक कला उत्सव आयोजित किया गया। उत्सव में संगीत प्रस्तुतियों में श्रीमती अरूणा साईराम, श्रीमती जयंती कुमारेश, रुद्रपटनम भाईयों, प्रो. टी एन कृष्णन द्वारा कर्नाटक संगीत तथा श्री देबाशीष भट्टाचार्य (हिंदुस्तानी गिटार) श्री उदय अवलकर (हिंदुस्तानी वोकल) पंडित वेंकटेश कुमार (हिंदुस्तानी वोकल) तथा डा. ध्रुव घोष (सारंगी) द्वारा हिंदुस्तानी संगीत शामिल है। कलाक्षेत्र ने 19–23 सितंबर 2011 को एक पांच–दिवसीय कथकक्ली उत्सव 'राजसम' पुस्तुत किया। नवम्बर 2011 में कलाक्षेत्र ने अलाएंस फ्रैकेस के साथ सहयोग के पांच–दिवसीय इंडो–फ्रेंच कंटेम्पोरेरी डांस फेस्टीवल की मेजवानी की। अक्टूबर 2011 में उत्तर पूर्व विकास कार्यक्रम के एक भाग के रूप में कलाक्षेत्र ने पूर्वोत्तर राज्यों की दो राजधानियों में कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जुलाई 2011 में इंडा–कोरियन सेन्टर ने कलाक्षेत्र में चौथा सैमसंग महिला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म उत्सव का आयोजन किया। दिसंबर, 2011 में कलाक्षेत्र प्रतिष्ठान ने प्रकृति प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित एक चार–दिवसीय कविता पठन उत्सव की मेजबानी की। कुछ समय बाद गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के 150वीं जयंती समारोह के एक भाग के रूप में कलाक्षेत्र ने जापान के पठन का आयोजन किया। मंत्रालय नियमित रूप से कलाक्षेत्र के निष्पादन का मानिटरिंग करता रहता है और यह पता चला है कि प्रतिष्ठान सही दिशा में कार्य कर रहा है।

राष्ट्रीय संस्कृति निधि

राष्ट्रीय संस्कृति निधि (एनसीएफ) मानव संसाधन विकास संबंधी संसदीय स्थायी समिति की दसवीं रिपोर्ट में दो गई सफारिशों के आधार पर दिनांक 28 नवंबर 1996 को गजट अधिसूचना एस–ओ. नं. 695 के माध्यम से चेरिटेबल एंडोमेंट एक्ट 1890 के अंर्तगत एक ट्रस्ट के रूप में संस्कृति विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा बनाया गया था।

इसका उद्देश्य भारत की मूर्त एवं अर्मूत सांस्कृतिकविरासत का उन्नयन संरक्षण एवं अनुरक्षण के लिए संसाधन जुटाना था। राष्ट्रीय संस्कृति निधि इस कार्य में राज्य सरकारों, कॉरपोरेट सेक्टर, गैर सरकारी संगठनों, निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्रों की भागीदारी को प्रात्साहित करता है। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार इस निधि की कायिक निधि के लिए 19.50 करोड रू. का प्रावधान करने के लिए वचनबद्ध हैं और एन सी एफ की कायिक निधि के लिए पूरी धनराशी प्रदान करने की अपनी वचनबद्धता को इसने पूरा किया है। 31 मार्च 2011 की स्थिति के अनुसार एनसीएफ के पास उपलब्ध कुल धनराशि 43.13 करोड़ रू. है और जिसमें भारत सरकार द्वारा प्राथमिक कायिक निधि के रूप में प्रदान किए गए 19.50 करोड़ रू. के अतिरिक्त 11.60 करोड़ रू. की परियोजना निधि तथा माध्यमिक कायिक निधि में 12.30 करोड़ रू. शामिल है। इसके अतिरिक्त इण्डियन ऑयल कॉरपोरेशन से इसकी परियोजना निधि के रूप में 27.00 करोड़ रू. की राशि प्राप्त हुई है, तथा इस धनराशी में से 1.00 करोड़ रू. एनसीएफ और इंडियन ऑयल फाउंडेशन के संयुक्त बैंक खाते में एनसीएफ के पास रखे गऐ है तथा शेष धनराशि इंडियन ऑयल फाउंडेशन के पास रखी गई है। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान एनसीएफ परियोजनाओं के निजी क्षेत्र के वित्तपोषकों द्वारा चार परियोजनाओं का परियोजना कार्यान्वयन को समिति की कई बैठकें एंव उचित प्रबंधन के साथ पुनः सक्रिय एंव पुनः विकासित किया गया है। राष्ट्रीय संस्कृति निधि ने सार्वजानिक एवं निजी क्षेत्र के साथ भागीदारी में इन इस वर्ष 13 से अधिक नए समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए और नौ नई परियोजनाएं शुरू कीं। पिछले दो वर्षों के दौरान मंत्रालय द्वारा एनसीएफ की समीक्षा से यह अनुमान लगाया जाता है कि इसे सौंपा गया कार्य यह सफलापूर्वक तरीके से कर रहा है।

अकादेमियाँ तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

संस्कृति मंत्रालय के अधीन तीन राष्ट्रीय अकादेमियाँ नामतः संगीत नाटक अकादेमी, साहित्य अकादेमी ललित कला अकादेमी तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन एस डी) हैं जो पूर्णतः वित्तपोषित स्वायत्त संगठन हैं। मंत्रालय द्वारा देश में मंच, साहित्य और प्लास्टिक कलारूपों का संवर्धन करने के लिए इन अकादमियों की स्थापना की गई थी। ये अकादेमियाँ इन कलारूपों के संवर्धन के लिए अपने संबंधित वर्गीकृत क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करती आ रही हैं। सरकार द्वारा राष्ट्रीय नाट्य

विद्यालय (एन एस डी) की स्थापना, विभिन्न समूहों को नाट्य कला में प्रशिक्षण देकर देश में मंच कार्यकलापों का संवर्धन करने के लिए की गई थी। एन एस डी देश का एक प्रतिष्ठित संस्थान माना जाता है।

संगीत नाटक अकादेमी (एस एन ए)

संगीत नाटक अकादेमी की स्थापना, देश में मंच कलाओं के संवर्धन के लिए वर्ष 1953 में की गई थी। अकादेमी, भारतीय संगीत, नृत्य और नाटक के संवर्धन और विकास; मंच कला और संबंधित क्षेत्र में प्रशिक्षण के मानदंड को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है। एस एन ए का नई दिल्ली में अपना कथक केंद्र तथा मणिपुरी नृत्य के संवर्धन के लिए इंफाल में जवाहर लाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी है। इन केंद्रों के अतिरिक्त, एस एन ए के पास भारत में विशिष्ट कलारूपों के संवर्धन के लिए केरल में कुट्टीयट्टम केंद्र और बारीपाडा, जमशेदपुर में छऊकेंद्र हैं। अकादमी भारत की मंच कलाओं को प्रोत्साहित करने में प्रयासरत है तथा इसे प्रख्यात अनुभवी और युवा पीढ़ी के प्रतिभावान कलाकारों को प्रशिक्षण कार्यक्रम, छात्रवृत्ति प्रदान करने एवं प्रलेखन के माध्यम से प्रदर्शनों के द्वारा प्राप्त करता है। वर्ष 2010–11 के दौरान संगीत नाटक अकादमी ने अपने भंडार में 52 घण्टे की श्रव्य तथा 444 घंटो की दृश्य रिकार्डिंग, 11031 ब्लैक एंड तथा वाइट तथा रंगीत फोटोग्राफ शामिल किया। अकादेमी ने 9 नामांकन डोजियर भेजे जिसमें एस एन ए द्वारा कव्वाली, डब्ल्यू जेड सी सी द्वारा पगड़ी बाधने, ए पी सरकार, द्वारा कलमकारी चित्र, एन जेड सी सी जनगम गायन, केरल सरकार द्वारा चेट्रीकुलांगरा कुम्भ भारती केट्टुकाजाचा, गोआ सरकार द्वारा सम्मेलन, आई जी एन सी ए द्वारा गड्डी जाटर, राष्ट्रीय ग्रंथालय, कोलकाता द्वारा दुर्गापूजा, एन एस डी द्वारा नौटंकी से लेकर 31.3.2011 को पेरिस के यूनेस्कों तक शामिल है। एस एस ए ने संगना सहित तीन पत्रिकाओं का प्रकाशन किया तथा अपनी रेपर्टरी द्वारा 3 नया प्रोडक्शन लगाए। इसने अपनी एक योजना के अंतर्गत रामलीला, बैदिक उद्घोष तथा कुटियातम की सहायता के साथ 33 संस्थानों/पेशेवरों को सहायता अनुदान देने की भी सिफारिश की। इसके अतिरिक्त 470 सांस्कृतिक संस्थानों की भी वित्तीय सहायता के लिए सिफारिश की तथा पूवोत्तर क्षेत्र निधियों से सहायता अनुदान के लिए 152 आवेदनों की सिफारिश की। वर्ष2011–12 के दौरान (दिसंबर 11 तक) संगीत नाटक अकादमी

ने 60 घंटों की ऑडियो तथा 324 घंटो की विडियो रिकार्डिंग का संवर्धन अपने सर्वेक्षण, प्रलेखीकरण तथा प्रचार परियोजना के अंतर्गत 7940 श्याम–श्वेत तथा रंगीन फोटोग्राफ का संवर्धन किया। इसने उत्सवों की एक श्रृंखला–पुतुल यात्रा उत्सव का भी आयोजन किया तथा गुवाहाटी और शिलोंग में भारतीय कठपुतली की प्रदर्शनी का भी आयोजन किया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान एस एन ए द्वारा विशाखपटनम में नृत्य प्रतिमा कार्यक्रम तथा नैनीताल में संगीत प्रतिभा का भी आयोजन किया। इसने देश के विभिन्न भागों में नई उत्सव कार्यशालाओं तथा प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया। टैगोर जी की 150वीं जयंती समारोह के लिए एस एन ए ने रबीन्द्र प्रनति, थियटर उत्सव (देहरादून), रिमेम्बरिंग रबीन्द्रनाथ, नृत्य नाटक नृत्यांजलि का आयोजन किया। डॉ. भूपेन हजारिका को श्रद्धांजलि दी।

साहित्य अकादेमी

साहित्य अकादेमी की वर्ष 1954 में संस्कृति मंत्रालय के स्वायत्तशासी संगठन के रूप में स्थापना की गई थी। साहित्य अकादमी एक राष्ट्रीय संगठन है जो सभी भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को पोषित एवं समन्वित करना है तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देकर भारतीय भाषाओं का विकास करने तथा उच्च साहित्यिक मानक तय करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करता है। यह देश में साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और इसके संवर्धन के लिए प्रमुख संस्थान है। यह देश का एकमात्र संस्थान है जो अंग्रेजी सहित 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यकलाप चलाता है। इसने अपने अस्तित्व के 56 वर्षों से अब तक अच्छे विचारों एवं अच्छी पठन आदतों की बढ़ावा देने, सेमिनारों, संगोष्ठियों, व्याख्यानों, चर्चाओं, पठन एवं प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत की विभिन्न भाषाओं एंव साहित्यिक क्षेत्रों के बीच बातचीत को जिंदा रखने के लिए जिसमें कार्यशालाओं एवं व्यक्तिगत कार्यों के माध्यम से आपसी स्थानांतरणों की गति को बढ़ाने की लिए लोक कलाओं का प्रयोग शामिल है और पत्रिकाओं, मोनोग्राफ, प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्तित्व और सृजनात्मक कार्य एंथोलोजी, विश्वकोष, शब्दकोश, पुस्तक सूचियों, लेखक निर्देशिकाओं और साहित्य के इतिहास के प्रकाशन के माध्यम से एक महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्कृति का विकास करने के लिए प्रयास किया है। साहित्य अकादेमी ने अपने अस्तित्व से दिसंबर 2011 तक 24 भारतीय भाषाओं में 6400 से

अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस वर्षइसने (रिप्रिंट साहित) लगभग 420 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। साहित्य अकादेमी, अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का बहुभाषीय पुस्तकालय है जिसका संग्रह मुख्य रूप से साहित्य और संबद्ध विषयों से संबंधित है। इसमें दिसंबर 2011 तक लगभग 1,62,311 पुस्तकों का संग्रह मौजूद है। अकादेमी का पुस्तकालय दिल्ली और राष्ट्रीय राजभाषा क्षेत्र के लोगों को पाठक सेवाएं दे रहा है तथा इसका व्यापक प्रयोग होता है। यह आधुनिक भारतीय साहित्य में अध्ययन एवं अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और इसके 9000 से अधिक पंजीकृत सदस्य, है तथा क्षेत्रीय कार्यालय पुस्तकालय बंगलौर में 900 वॉल्यूम जोड़े गऐ हैं जिसमें कुल 26,340 पुस्तकें हैं, क्षेत्रीय कार्यालयो पुस्तकालय, कोलकाता में 3950 संकलन हैं तथा 22605 पुस्तकें और क्षेत्रीय कार्यालयी पुस्तकालय मुंबई में कुल 6460 पुस्तकों के साथ 395 पुस्तकें और जोड़ी गई हैं।

ललित कला अकादेमी (एल के ए)

भारत में दृश्य कलाओं के विकास और संवर्धन के लिए वर्ष 1954 में स्थापित ललित कला अकादेमी, एक राष्ट्रीय कला अकादेमी है। अकादमी के मुख्य कार्य देश में विशेष रूप से समकालीन कला के क्षेत्र में कला के विकास के लिए कलाकार वर्ग को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना है। कला के विकास के प्रति अकादेमी की वचनद्धता नई दिल्ली में इसके मुख्यालय तथा भुवनेश्वर, चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, शिमला और गढ़ी, नई दिल्ली में स्थित इसके क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से स्पष्ट है। पूरे भारतीय महाद्वीप में काम करने वाले एक सांस्कृतिक निकाय के रूप में यह भारत की विविध संस्कृतियों को आपस में जोडने, भारतीय जीवन की अलग विशेष विशिष्टताओं को जोड़ने वाले सृजनात्मक प्रतिभाओं एवं प्रकाशमान अभिकल्पनों के रंगीन भागों के माध्यम से फैली संस्कृति के जोड़ने में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। अकादेमी ने 'आरिस्ट ऑन आर्ट' नामक एक नई श्रृंखला शुरू की है, यह कार्यक्रम अकादेमी का नियमित आयोजन हो गया है। इसे आधुनिक एंव वर्तमान भारतीय कला की प्रगति में प्रमुख योगदान देने वाले कलाकारों के अनुभवों एवं यादों को जोड़कर कला के मौखिक इतिहास का दस्तावेज़ बनाने के लिए बनाया गया है। इस कार्यक्रम के लिए अकादेमी एक प्रख्यात कलाकार

तथा एक कला आलोचक अथवा कला के इतिहासकार अथवा क्यूरेटर को कलाकार के साथ बातचीत करने के लिए बुलाया जाता है। कलाकार अपने कार्यो का स्लॉईड शो प्रस्तुत करता है और एक विशिष्ट कार्य को बनाने की प्रक्रिया की गहन जानकारी और ब्यौरा देता है। आलोचक, कलाकार को यात्रा को सघन समझ प्रदान करता है। जिससे कलाकार और उसके कार्यों को समझने में मदद मिलती है। इस परियोजना के पीछे एक अभिलेखीय मंशा भी है ताकि अकादेमी के पास ऐसी सामग्री आ जाए जिसे अकादेमी संरक्षित कर सके और उसका प्रयोग अनुसंधान के लिए हो सके। इस श्रृंखला के बैनर तले अकादेमी ने 17–10–2011 को एक प्रख्यात कलाकार श्री गुलाम मोहम्मद शेख को आंमत्रित किया। अकादेमी तथा संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार ने ''गुरूदेव रविद्रं नाथ टैगोर की 150वीं जयंती''; सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत बांग्लादेश का एक संयुक्त समारोह को मनाने के लिए अकादेमी बेंसमेंट गैलरी में 10 से 16 मई 2011 तक आर्टिस्ट–इन–रेंजिडेंस कार्यक्रम के अंर्तगत बांग्लादेश के कलाकारों द्वारा एक चित्रकला कैंप बांग्ला तुली आयोजित कियां प्रख्यात कलाकार और अकादमी के फैलो प्रो. ए. रामचन्द्रन ने इस कैंप का उद्घाटन किया। इस कैंप में भाग लेने के लिए बंग्लादेश से कलाकार हमीदउज्जमान खान, अहमद शमशुदोहा, अब्दुल मन्नान, नसरीन ब्रेगम, मोहम्मद इक़बाल, शेख अफ़जल हुसैन, मोहम्मद युनेस, गोलम फरूख़ बेबूल को चुना गया। अकादेमी ने अकादमी की गैलरी में गायत्री सिन्हा के संरक्षण में ''टालस्टाय फार्म'' आर्कायिव ऑफ यूरोपिया'' नामक एक प्रदशर्नी का आयोजन किया। 27 अप्रैल 2011 को माननीय संस्कृति, आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्री, कुमारी सैलजा ने इसका उद्घाटन किया। यह प्रदशर्नी 19 मई 2011 तक चली। अकादमी में 28 अप्रैल 2011 को ''मेकिंग आर्ट इश्यू इन डॉकटिस'' शीर्षक पर एक पैनल चर्चा का आयेाजन किया। इसके पैनल पर रणवीर काले का मीठू सैन, रियास कोमू, गिरी सकेरिया, अर्चना हांडे और प्रो. पारुल मुखर्जी दवे शामिल हैं। अकादेमी सीगल बुक स्टोर, कोलकाता पर, सोमनाथ होर पर 13.8.2011 एक पुस्तक का विमोचन किया। इस अवसर पर अकादमी के अध्यक्ष श्री अशोक वाजपेयी मुख्य अतिथि थे। इस बुक का संपादन नानक गांगुली द्वारा किया गया है। इस समारोह के दौरान मोहन कोल, प्रणव रंजन रे, चंदना होर, और नानक गांगुली ने सोमनाथ होर पर अपने विचार रखे। कोस्तुभ ऑडिटोरियम नई दिल्ली में अकादेमी द्वारा 37 फिल्म। विडियो शो का आयोजन किया गया। अकादेमी ने 3–6–2011 से 27–11–2011 तक इटली में हुई'' 54वीं अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी : लॉ विएनले डी वेनेज़िया'' में भाग लिया।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन एस डी)

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय विश्व का एक अग्रणी रंगमंच प्रशिक्षण संस्थान है तथा भारत में अपनी तरह का एकमात्र संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1959 में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा अपनी एक सहायक ईकाई के रूप में की गयी थी और बाद में 1975 में यह एक स्वतंत्र ईकाई बन गई। यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णताः वित पोषित एक स्वायत्त संस्थान है। इस विद्यालय का उद्देश्य अभिनय और निर्देशन और स्टेज क्राफ्ट के क्षेत्र में छात्रों को प्रशिक्षण देना है और यह तीन वर्षीय स्नात्तकोत्तर डिप्लोमा देता है जोकि स्नात्तकोत्तर हिन्दी के समकक्ष है और भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा मान्यताप्राप्त है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय ने 7 से 22 जनवरी 2011 तक अपने 13वें बी.आर.एम. का आयोजन किया। इसमें कुल 31 नाटकों का मंचन किया गया जिसमें से 23 नाटक विदेशों से थे। विद्यालय ने संबद्ध (आयोजनों का आयोजन किया जैसे एशिया–पेसिफिक ब्यूरों ऑफ ड्रामा स्कूल का उत्सव, परस्पर वार्तालाप सत्रों द्वारा निदेशकों के साथ परस्पर वार्तालाप सत्र के उपरांत व्याख्यान इत्यादि। इस उत्सव कार्यक्रमों के एक भाग के रूप में तीन फोटोग्राफी प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया गया जिनमें से एक एशियन थियेटर स्कूल की कार्यप्रणालियों (एशिया पेसिफिक ब्यूरो, ड्रामा स्कूल उत्सव के एक भाग के अंर्तगत) पर, अभिनेताओं पर एक प्रदर्शनी जिसका शीर्षक अभिव्यक्ति है तथा तीसरी ''फूट्स बार्न कंपनी'' पर थे। उत्सव के दायरे को बढ़ाने और दिल्ली के बाहर रंगमचं प्रेमियों के साथ इसके समृद्ध तत्वों को बांटने के उद्देश्य के उत्सव को दूसरे शहर में ले जाने की परम्परा के अंर्तगत मुख्य आयोजन से कई नाटकों को चेन्नई ले जाया गया जहां दिल्ली में उत्सव के साथ–साथ 11से 20 जनवरी 2011 को भारत रंग महोत्सव चेन्नई का आयोजन हुआ। अकादमिक सत्र 2011–12 के लिए पूरे देश से 26 छात्रों को चुना गया जिनमें सरकार की नीति के अनुसार अ.जा./अ. जन जा. तथा अ.पि.व. श्रेणियों के छात्र भी शामिल है। वर्ष 2011–12 में रेपर्टरी कंपनी ने 19 मई से 16 जून, 2011 तक कई प्रमुख नाटकों का मंचन किया जिसमें एम.के.रैना. द्वारा 'बाणभट्ट की आत्मकथा' मोहित टाकलकर द्वारा 'कामरेड कुंभकर्ण ' तथा कीर्ति जैन द्वारा 'हमारा शहर उस बरस शामिल है।

रेपर्टरी कंपनी के नवनिर्मित विंग 'यायावर ' ने रंजित कपूर द्वारा चेखव की दुनिया, आदमज़ाद और पंचलाईट का मंचन किया और दिल्ली में 21 से 26 नवंबर 2011 तक अपना टूअर किया और बाद में मध्यप्रदेश के 13 शहरों में 3 से 31 दिसंबर 2011 तक बैंगलूर, हैदराबाद, गोवाहाटी, शिव सागर, सिलिगुड़ी और कोलकाता में भी टूअर किया जहां 'बेग़म का तकिया', 'ब्लड वेडिंग', 'कॉमरेड कुंभकरण', 'हमारा शहर उस बरस' और 'जात ही पूछो साधु की' का मंचन किया।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आई जी एन सी ए)

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र 1987 में स्थापित एक स्वायत्त न्यास है। यह अध्ययन और सभी कलाओं, जिनकी अपनी अलग-अलग पहचान होते हुए एक-दूसरे के साथ परस्पर निर्भर हैं, के अध्ययन और अनुभव को समाहित करने वाला एक केन्द्र है। आई जी एन सी ए का संसाधन सामग्री के संग्रह, कला तथा मानविकी के क्षेत्र में मूल अनुसंधान के कार्यक्रम, विज्ञान की शाखाओं, भौतिकी एवं भौतिक सैद्धान्तिकी, मानव विज्ञान तथा समाज विज्ञान के साथ परस्पर संबंध के माध्यम से सुदृढ़ करने का प्रयास है। केन्द्र के शैक्षिक कार्यक्रमों के संचालन तथा प्रशासनिक व्यय की पूर्ति इसकी अक्षय निधि से अर्जित ब्याज से की जाती है। केन्द्र को इसकी चुनिंदा परियोजनाओं/स्कीमों तथा साथ ही इसकी भवन परियोजनाओं के लिए निधियाँ भी प्रदान की गई है। 11वीं पंचवर्षीय योजना के प्रारंभ में आई जी एन सी ए ने बड़ी नई स्कीमें शुरू की जैसे-बहु-स्तरीय पहचान और कला में उनकी अभिव्यक्ति, संसाधन वृद्धि एवं आधुनिकीकरण तथा डिजिटल प्रारूप में सांस्कृतिक सूचनापरक विकास एवं प्रसार। कम्प्यूटर सूचनापरक प्रयोगशाला ने, राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन जिसके पास वस्तुओं के डाटा तथा चित्र उपलब्ध हैं तथा जो पुरावशेष के रूप में रजिस्ट्रेशन के लिए उद्धृत हुआ है, के अन्तर्गत 47,000 पुरावशेष पंजीकरण प्रारूपों का डिजिटीकरण किया है।

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान आई जी एन सी ए ने प्रख्यात शिक्षाविदों के मौलिक पाठ, जनजातीय एवं लोक संस्कृति पर मौनोग्राफ, पाठों का पुनः प्रकाशन के महत्वपूर्ण संस्करणों के प्रकाशन से संबंधित कार्य किया। वर्ष 2010-11 के दौरान इस शोध एवं क्षेत्र अध्ययनों के अतिरिक्त श्रब्य-दृश्य प्रलेखीकरण ; प्रदर्शिनियों तथा मल्टी-मीडिया आयोजनों का प्रदर्शन भी किया

गया। इसने फिल्मों, सीडी, आडियो विजुअल रिकार्डिंग इत्यादि बनाना भी शुरू किया। संसाधन संवर्धन एवं आधुनिकीकरण योजना के एक भाग के रूप में. कई पुस्तकें पत्रिकाएं, इत्यादि इसके पुस्तकालय में जोड़े गए। वर्ष 2011–12 के दौरान, (दिसम्बर 2011 तक) विविध कलाओं में बहु–विषयक शोध एवं महत्वपूर्ण विचार–विमर्श को बढ़ावा देने संबंधी अधिकांश योजनाओं/परियोजनाओं को पूरा कर लिया गया है तथा शेष चालू स्थिति में हैं। आई जी एन सी ए ने दिसम्बर 2011 तक रेप्रोग्राफी कम्प्यूटर सेन्टर एण्ड मीडिया प्रोडक्शन में अधुनातन पुस्तकालय सेवाओं के आधुनिकीकरण, पूर्वोत्तर से पुरातत्वीय सामग्री का संग्रहण, प्रदर्शन एवं प्रदर्शनियों के लिए स्थायी गैलरियों का निर्माण कार्य शुरू किया। मंत्रालय केन्द्र के निष्पादन और कार्यकरण का निकटता से मानिटरिंग करता रहा है।

संग्रहालय

संग्रहालय, राष्ट्र की बहुमूल्य धरोहर के वृहत् भंडार हैं। संग्रहालय लोगों की पसंद विकसित करने तथा उन्हें देश के इतिहास और विरासत के बारे में जानकारी देने और भारत में उपलब्ध सृजनात्मक प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने में सकारात्मक तथा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मंत्रालय इन संग्रहालयों को कला, शिक्षा, अनुसंधान तथा परिबोधन के संवर्धन में कार्यरत संगठनों में परिवर्तित करने का प्रयास कर रहा है। मंत्रालय इसके अधीन संग्रहालयों के निष्पादन की नियमित समीक्षा करता है तथा आवश्यक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान करता है। आजकल कलाकृतियों तथा अन्य प्रदर्शनीय वस्तुओं के प्रदर्शन तथा प्रलेखन में सूचना प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल पर काफी बल दिया जा रहा है। संग्रहालयों की वीथियों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आधुनिक बनाने पर ध्यान दिया जा रहा है। आर्थिक रूप से विकसित देशों में प्रचलित संग्रहालयों के अंतर्राष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति मंत्रालय का 11वीं पंचवर्षीय योजना अवधि में महानगरों में प्रमुख संग्रहालयों का उन्नयन और आधुनिकीकरण कार्य शुरू करने का प्रस्ताव है। इस संदर्भ में इन संग्रहालयों द्वारा शुरू किए जाने वाले फोटो प्रलेखन तथा डिजिटीकरण का कार्य महत्वपूर्ण हो जाता है। संग्रहालय अपने सांस्कृतिक तथा शैक्षिक कार्यकलापों के माध्यम से आम जनता तथा

बच्चों तक पहुंचने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। 2010–11 और 2011–12 (दिसम्बर 2011 तक) के दौरान संग्रहालयों के निष्पादन की समीक्षा की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता

भारतीय संग्रहालय, कोलकाता, जिसकी स्थापना भारतीय संग्रहालय अधिनियम, 1910 के अनुरूप की गई थी, भारत में अपनी किस्म का सबसे बड़ा और सबसे पुराना संस्थान है। यह संग्रहालय सदियों पुराने सांस्कृतिक लोकाचारों तथा परंपराओं को प्रस्तुत करने वाली भारतीय तथा विदेशी कलाकृतियों का अद्वितीय खजाना है। संग्रहालय में कुछेक दुर्लभ मूर्तियों, कांस्य एवं धातु वस्तुओं, सिक्कों, वस्त्रों तथा सजावटी कला नमूनों सहित चित्रों का विशाल भंडार है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान कलावीथियों, पुरातत्व एवं मानव विज्ञान अनुभागों के आधुनिकीकरण और विकास कार्य को सुदृढ़ किया गया है। संग्रहालय द्वारा व्यापक स्तर पर फोटो प्रलेखन का कार्यक्रम शुरू किया गया है। वर्ष 2010–11 के दौरान, भारतीय संग्रहालय ने भौतिक रूप से कला; पुरातत्व तथा मानव विज्ञान संबंधी वस्तुओं की जांच की। संग्रहालय 961 वस्तुओं का रासायनिक उपचार किया तथा प्राचीन वस्तुओं के प्राचीन मूल्यवान प्रलेखित निगेटिव का रख–रखाव किया जिसमें 7021 रंगीन तथा ब्लैक एण्ड वाइट फोटो का डिजिटलीकरण; 2413 फोटोग्राफ का मुद्रण; 1945 प्राचीन वस्तुओं का फोटो प्रलेखीकरण; 7965 प्राचीन वस्तुओं का डिजीटल फोटो प्रलेखीकरण और 2413 रंगीन फोटो शामिल है। इसने 475 प्लास्टर की बनी प्रतिकृतियों तथा 9 रंगीन प्रतिकृतियों का निर्माण किया; 40 उपयोगी किटों की आपूर्ति की। भारतीय संग्रहालय की 197 वीं वर्षगांठ के अवसर पर इसने 2 फरवरी से लेकर 11 फरवरी 2011 तक ''लावण्य –द ब्यूटी इन इंडिया आर्ट'' पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की इस अवसर पर 4 फरवरी, 6 फरवरी, 8 फरवरी और 9 फरवरी 2011 को प्रख्यात कलाकारों द्वारा भारतीय संग्रहालय द्वारा सेन्ट्रल कोर्टयार्ड में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयेजन किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक)संग्रहालय ने कवि गुरू रबीन्द्र नाथ टैगोर की 150 वीं जयंती के अवसर पर फोटोग्राफ सहित चित्रकला पर ''जोरासंको ठाकुर बरी ओ रबीन्द्र नाथ'' नामक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। म्यूज़ियोंलॉली विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर छात्रों के लिए भारतीय संग्रहालय

द्वारा संचालित संग्रहालय इंटर्नशिप कोर्स पूरा कर लिया गया है। माननीय संस्कृति मंत्री, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार कुमारी सैलजा ने 6–11–2011 को भारतीय संग्रहालय का दौरा किया। 1–से–4 दिसंबर 2011 को भारतीय संग्रहालय के आशुतोष बर्थ सेंटिनरी हॉल में भारतीय संग्रहालय के संग्रह में ''गणेशाः गिफ्टिड बॉई वंसत चौधरी'' नामक एक प्रदर्शनी का अयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का अयोजन श्री जवाहर सरकार, आई ए एस; सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया। डॉ. श्यामल कांती चक्रवर्ती, भूतपूर्व निदेशक, भारतीय संग्रहालय और श्रीमती शिप्रा चक्रवर्ती भूतपूर्व कीपर, कला अनुभाग, भारतीय संग्रहालय द्वारा लिखित '' गण देवता हन्ड्रड ऑईकन्स फ्रॉम वसंत चौधरी कलॅक्शन'' कैटलॉग का 1 दिसंबर, 2011 संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्री जवाहर सरकार आई.ए.एस. द्वारा विमोचन किया गया। इसकी शुरूआत ही मंत्रालय संग्रहालय के कार्यकरण की नियमित रूप से समीक्षा करता रहता है जिसमें यह पता चला है कि संग्रहालय अपने कर्त्तव्यों का संतोषजनक रूप से निर्वहन करता है।

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद

सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद 16 दिसम्बर, 1951 को अस्तित्व में आया। यह संग्रहालय 1961 में संसद के एक अधिनियम द्वारा घोषित राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। यह विविध यूरोपीयाई, एशियाई तथा विश्व के सुदूर पूर्वी देशों की कलात्मक उपलब्धियों का भंडार है। इस संग्रह का प्रमुख भाग सालारजंग–III के नाम से प्रसिद्ध नवाब मीर युसुफ अली खान द्वारा अधिगृहीत किया गया था। इस संग्रहालय में न केवल भारतीय मूल की कला कृतियों और प्राचीन वस्तुओं का बढ़िया संग्रह है बल्कि पश्चिमी, मध्यपूर्वी और पूर्व के दूर–दराज के क्षेत्रों का भी अच्छा संग्रह है। इसके अतिरिक्त एक बाल खण्ड है, एक समृद्ध संदर्भ पुस्तकालय जिसमें संदर्भ पुस्तके है जो कि शिक्षा के लिए एक समृद्ध भण्डार है। आज की तिथि के अनुसार संग्रहालय में तीन ब्लॉकों अर्थात् (1) भारतीय ब्लॉक (25 गैलरियां) (2) दुर्लभ पाण्डुलिपियों का बड़ा पश्चिमी संग्रह है। इसलिए यह संग्रहालय न केवल मनोरंजन के एक स्थान के रूप में बल्कि एक ब्लॉक के रूप में लोकप्रिय हो गया है (7 गैलरियां) (3) पश्चिमी ब्लॉक (5 गैलरियां)जिसमें 13404 वस्तुएं प्रदर्शित की गई है। कुल मिलाकर संग्रहालय में 37 गैलरियां है। वर्ष 2010–11 के दौरान संग्रहालय द्वारा विभिन्न अवसरों पर 18 विशेष प्रदर्शनियों, सेमिनारों, कार्यशालाओं, विशेष व्याख्यानों, मोबाईल फोटो

प्रदर्शनी इत्यादि का आयोजन किया गया। सभी वस्तुओं का डिजीटलीकरण और संरक्षित संग्रह की नेटवर्किंग पूरी की गई। संग्रहालय की रासायनिक संरक्षण प्रयोगशाला ने 5688 वस्तुओं तथा गैर वस्तुओं का उपचार किया; केन्द्रीय पश्चिमी और पूर्वी ब्लॉक में सी सी टी वी सुरक्षा प्रणाली का अधिष्ठापन पूरा किया गया। वाकिंग स्टिक और कॉईन्स गैलरी के लिए अभिकल्पन कार्य 2010–11 के दौरान प्रगति पर रहा। समीक्षधीन अवधि के दौरान संग्रहालय ने विभिन्न उत्सवों/अवसरों पर 19 प्रर्दशनियों का आयोजन किया। इस संग्रहालय को अप्रैल –दिसंबर 2011 की अवधि के दौरान 9,16,565 आगंतुकों तथा विदेशी मूल के 7258 आंगतुकों ने देखा। इस अवधि के दौरान संग्रहालय ने 2 कार्यशालओं, 7 मासिक व्याख्यानों इत्यादि का आयोजन किया। संग्रहालय की संरक्षण प्रयोगशाला ने संग्रहालय की 1177 कलाकृतियों और 704 गैर कलाकृतियों का रखरखाव किया। मंत्रालय नियमित रूप से संग्रहालय के निष्पादन की समीक्षा करता रहा है और यह देखा गया है कि यह सही दिशा में कार्य कर रहा है।

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल (वी एम एच), कोलकाता

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, जो राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है, की स्थापना भारत–ब्रिटेन इतिहास पर विशेष बल के साथ 1903 के विक्टोरिया मेमोरियल अधिनियम के तहत की गई थी। इस मेमोरियल में जलरंगों, सिक्कों, मानचित्रों, अस्त्र–शस्त्रों, पांडुलिपियों आदि का विशाल भंडार है। जबकि प्रारंभिक संग्रह तथा प्रदर्शन के प्रबंधों को ब्रिटिश साम्राज्य की सामासिक प्रस्तुति के रूप में देखा जाता है, दूसरी ओर स्वतंत्रता के बाद के संग्रह को भारतीय पहचान यानि राष्ट्रीय पहचान की खोज के रूप में देखा जा सकता है। वर्ष 2010–11 के दौरान मेमोरियल द्वारा शुरू किए गए प्रमुख कार्यकलापों में सेन्ट्रल हॉल तथा दरबार हॉल की बाहरी दीवारों की विशेष मरम्मत की गई तथा भवन की वार्षिक मरम्मत की गई। विभिन्न अवसरों पर 6 प्रदर्शनियां लगाई गई। उनमें भाग लिया गया। एम.एच–से पांच तैल चित्रों, त्रिपुरा राज्य संग्रहालय से एक तैल चित्र, चार प्राचीन फ्रेम उच्च न्यायलय से दो पुरातत्व फ्रेम एवं दो तैल चित्र, बर्दवान विश्वविद्यालय से 15 तैल चित्रों का जीर्णोद्धार संग्रहालय द्वारा किया गया। 12 विशेष व्याख्यान आयोजित किऐ गए। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) संग्रहालय ने रबीन्द्र भारती सोसाइटी संग्रह की 900 कला वस्तुओं का भौतिक सत्यापन एवं डिजिटीकरण किया तथा वी.एम.एच. की 6491 वस्तुओं का

ब्यौरा जे.ए.टी.ए.एन डेटाबेस सॉफ्टवेयर में डाला गया। इसने भारत और विदेश से 33 छात्रवृत्तियों को भी सहायता प्रदान की। कला वस्तुओं/तैल/चित्रों/प्राचीन फ्रेम के रखरखाव से संबधित कार्य तथा इनका संरक्षण ज़ारी रहा। समीक्षाधीन अवधि के दौरान मैमोरियल ने कई सेमिनारों, व्याख्यानों, कार्यशालाओं और विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया। मार्ग फाउंडेशन मुम्बई के सहयोग से एमिल ओटो होप द्वारा 1929 से फोटोग्राफ की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा डॉ. प्रतापादित्य पॉल, जरनल अडिटर, मार्ग फाऊडेंशन द्वारा संपादित समथिंग ओल्ड, संमथिग न्यू– रबीन्द्र नाथ टैगोर 150 बर्थ एनिवर्सिरी वॉल्यूम पुस्तक का विमोचन किया गया। इस प्रदर्शनी को 16–4–2011 को सांय 6:30 बजे वी.एम.एच. में देखा गया। विक्टोरिया मैमोरियल हॉल ने सैंट्रल 'कैलकटा साईंस एण्ड कल्चरल आर्गनाईज़ेशन फॉर यूथ' द्वारा भैरव गांगुली कॉलेज मैदान, बौलगढ़िया, कोलकाता में '' इवोल्यूशन ऑफ इंडिया एज ए ग्रेट नेशन इन द 21 सेंचुरी'' शीर्षक पर 15वीं राष्ट्रीय प्रदर्शनी के आयोजन में भाग लिया। वी.एम.एच. ने 20 से 29 दिसंबर 2011 को कुलतली, बसंती, पश्चिम बंगाल में वीएम.एच. के संग्रह की रचनाओं पर आधारित यामिनी रॉय को चित्रों की एक प्रदर्शनी लगाकर कुलतली मिलन तीर्थ सोसाइटी द्वारा आयोजित सुंदर बन क्रिस्टी मेलॉओ–लोक संस्कृति उत्सव 2011 में भाग लिया। मंत्रालय वी.एम.एच. के निष्पादन का नियमित रूप से मानिटरिंग करता रहा है और यह पाया गया कि वी.एम.एच. दिशा में कार्य कर रहा है।

इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद

इलाहाबाद संग्रहालय की स्थापना, इलाहाबाद नगर पालिका बोर्ड के तहत् 1931 में की गई थी। 1985 में इसे राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, संग्रहालय का कलाकृतियों तथा प्रकाशनों के अधिग्रहण संबंधी कार्यक्रम जारी रहा। संग्रहालय ने अवधि के दौरान अनेक कला प्रदर्शनियाँ आयोजित कीं। लोगों विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ विधिवत् रूप से शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कार्यकलाप आयोजित किए गए। संग्रहालय ने निजी स्कूलों और कॉलेजों तथा जवाहर नवोदय विद्यालयों में संग्रहालय कॉर्नर स्थापित करने के लिए प्रतिकृतियों का निर्माण किया। संग्रहालय ने व्यापक स्तर पर

आरक्षित संग्रह के पुनर्गठन का कार्य शुरू किया है। दर्शको तथा विद्यार्थियों को संग्रहालय संग्रह में त्वरित सुगमता प्रदान करने के लिए संग्रहालय में कियोस्क स्थापित किए गए हैं। वर्ष 2010–11 के दौरान संग्रहालय ने विभिन्न विषयों पर 50 पुस्तकें अर्जित की और उन पर प्राप्ति क्रमांक डाला। 600 पुस्तकों को वर्गीकृत और सूचिबद्ध किया गया । वर्ष के दौरान कुल 522 वस्तुओं, जिसमें 70 पत्थर की मूर्तियां, 10 चित्र, 300 पाण्डुलिपियां, 110 कांस्य एंव अन्य धातु, की वस्तुएं ष्शामिल हैं, के संरक्षण के अलावा 25 पुरातत्तवीय दस्तावे़ज पर भी कार्य शुरू किया गया। अर्जित की गई नई वस्तुओं, पुरस्कृत चित्रों/क्ले मॉडलिंग इत्यादि की तीन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सूचना विभाग, इलाहबाद के सहयोग से संग्रहालय द्वारा 27 फरवरी 2011 को अकबर इलाहबादीः समय और चुनौतियां शीर्षक पर एक राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया। वर्ष 2011–12 में (अप्रैल–दिसंबर 11) संग्रहालय ने तीन प्रकाशन निकाले और सात व्याख्यानों/ मैमोरियल लैक्चर/राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किये। संग्रहालय ने 14–11–2011 –26–11–2011 को ''भारत और इलाहबाद के स्मारक'' पर एक प्रदर्शनी लगाई। मंत्रालय निरन्तर संग्रहालय के निष्पादन व कार्यकरण की निगरानी करता आ रहा है।

राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान : कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान (एन एम आई), नई दिल्ली

इस संस्थान की स्थापना सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत की गई तथा इसे 27.01.1989 को पंजीकृत किया गया। इसे 28 अप्रैल, 1989 को भारत सरकार द्वारा विश्वविद्यालयवत का दर्जा दिया गया। संस्थान का मुख्य उद्देश्य कला इतिहास, संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान आदि की विभिन्न शाखाओं में अध्ययन, प्रशिक्षण तथा अनुसंधान के विभिन्न पाठ्यक्रम चलाना है। संस्थान कला इतिहास संरक्षण तथा संग्रहालय विज्ञान के क्षेत्र में एम. ए. तथा पी. एच. डी. के पाठ्यक्रम चलाता है तथा उपाधियां देता है। वर्ष 2010–11 के दौरान, 45 विद्यार्थियों में से एम.ए. पाठ्यक्रम में 10 विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए और 6 विद्यार्थियों ने पी.एच.डी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। समीक्षाधीन अवधि के दौरान लगभग 200 छात्रों ने अल्पकालिक पाठ्यक्रमों में भाग लिया । एक अंर्तराष्ट्रीय संगोष्ठी तथा चार राष्ट्रीय सेमिनारों/कार्य शालाओं/प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया तथा चार विशेष व्याख्यानों का संचालन किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) एन.एम. आई. द्वारा स्वंतत्र रूप से अथवा अन्य संगठनों/संस्थानों के सहयोग में आठ कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में ''प्रिवेंटिव केयर

ऑफ मेटल्स इन एण्ड आउटडोर कलेक्शनस पर भारत आस्ट्रेयाई कार्यशाला; जी.ओ.––''ए बी बालिका'', नई दिल्ली; ''टीचर रिर्सोस पैक''; ''रिसेंट ट्रैड्स इन कंज़रवेशन''; ''केजरवेशन ऑफ स्टोन एण्ड सिरेमिक आब्जैक्टस्''; ''क्म्यूनिकेशन एण्ड इंटरप्रेटेशन इन द म्यूज़ियम्स'' इत्यादि ष्शामिल है। एन.एम.आई. के अधिकारियों और नेशनल सेंटर फॉर डाक्यूमेंटेशन एण्ड रिसर्च (एन.सी. डी.आर.), आबूधाबी, यू.ए.ई. के अधिकारियों के बीच एक बैठक आयोजित की गई जिसमें दोनों संगठनों के बीच सहयोग की संभावनाओं पर विचार किया गया। इसकी ष्शुरूआत से मंत्रालय नियमित रूप से इसकी समीक्षा करता रहा है। यह पाया गया कि संस्थान ने विशेषीकृत क्षेत्र के एक शैक्षिक संस्थान के रूप में अपने कर्त्तव्य का निर्वहन किया है।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद, कोलकाता

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एन सी एस एम), जो 4 अप्रैल 1978 को अस्तित्व में आई, की स्थापना समाज के लाभार्थ देश में नये विज्ञान शहरों के प्रचालन, अनुरक्षण तथा विकास के उद्देश्य से की गई थी। इसके मुख्य कार्यकलाप विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास और उद्योग तथा मानव कल्याण में उसके उपयोग की दिशा में अभिप्रेत हैं। अन्य मुख्य कार्यकलाप स्कूलों तथा कॉलेज विद्यार्थियों के लिए प्रदर्शनियाँ, सेमिनार, लोकप्रिय व्याख्यान, विज्ञान शिविर तथा विभिन्न अन्य कार्यकलाप आयोजित करके विद्यार्थियों तथा आम व्यक्ति के अलावा शहरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में विज्ञान और प्राद्योगिकी को लोकप्रिय बनाना है। वर्तमान में यह परिषद संस्कृति मंत्रालय से जुड़ा हुआ है। गत तीन दशकों में एन सी एस एम ने अपने प्रशासनिक नियंत्रण ने देश में' 25 विज्ञान संग्रहालय और विज्ञान केद्रों का बड़ा नेटवर्क स्थापित किया गया है। परिषद को अपने व्यापक नवोन्येयक विज्ञान संचार कार्यकलापों के लिए विश्व के सभी भागों में सम्मान एंव आकर्षण अर्जित किया है। वर्ष 2010–11 के दौरान आर सी, रांची तथा आर एस सी,रायपुर का विवरण पूरा किया गया और आर एस सी, कोयंबटूर; आर एस.सी. पीलीकूला, आर.एस. सी. जयपुर; एस.आर.एस.सी ज़ोरहॉट, विज्ञान केंद्र, पी.सी.एम.सी पुणे, एस आर एस.सी जोधपुर, एस.आर.एस. सी.पुाडुचेरी, आर. एस.सी. देहरादून में कार्य प्रगति पर है। वर्ष के दौरान कई नई गैलरियों तथा विभिन्न विज्ञान केद्रों की गैलरियों के पुनरूद्धार का कार्य पूरा किया गया तथा शेष विज्ञान केंद्रों पर कुछ पुनरूद्धार कार्य प्रगति पर है। एनसीएमम ने तीन अन्य यात्रा प्रदर्शनियाँ

तथा कई प्रमुख शैक्षिक कार्यक्रमों, जिसमें लेजर शो, विज्ञान मेले, विज्ञान सेमिनार, नाट्य उत्सव इत्यादि शामिल है, का आयोजन किया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) धारवाड़ और रायपुर में क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र शुभांरभ के लिए तैयार है। कोयंबटूर, पीलीकुला, पी.सी एन.सी., पुणे, जयपुर, देहरादूर में आर.एस. सी. तथा ज़ोरहाट, जोधपुर और पुडुचेरी में उपक्षेत्रीय विज्ञान केद्रों (एस. आर. एस.सी) का स्थापना कार्य प्रगति पर है। बारहगढ़ उड़ीसा; जम्मू और कश्मीर, मैसूर, कर्नाटक, उदयपुर, त्रिपुरा, चण्डीगढ़, अम्बाला और राजा मुंद्री, आध्रंप्रदेश में विज्ञान केद्रों की स्थापना संबंधी कार्य कार्यान्वयन में है। एन.सी.एस.एम. ने आर.एस.सी गुवाहाटी में ''फनसाईंस'' एन.एस.सी मुम्बई में ''हॉल ऑफ दी हिस्टोरिकल लाईफ'', डी एस.सी. पुरूलिया में '' चिल्ड्रंस गैलरी'', एन.एस.सी मुम्बई में ''हॉल ऑफ न्यूक्लीयर पॉवर'' इत्यादि सहित कई नई गैलरियों का विकास किया/स्थापित की। समीक्षाधीन अवधि के दौरान परिषद ने 8 विज्ञान केद्रों में नई सुविधाऐं प्रदान की तथा 7 नई यात्रा प्रदशनियाँ शुरू की और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कार्यक्रमों में भाग लिया, अन्य संस्थानों के उत्प्रेरक सहायता दी, ''प्राशिक्षण कार्यक्रमों/कार्यशालाओं का आयोजन किया तथा परिषद के अनुसंधान एवं विकास के अंतर्गत साफ्टवेयर एवं नए प्रदर्शों का विकासके अंतर्गत साफ्टवेयर एवं नए प्रदर्शों का विकास किया। मंत्रालय परिषद के निष्पादन को नियमित रूप से समीक्षा करता आ रहा है और यह पाया गया है कि राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद तथा विज्ञान केंद्र बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहे है।

पुस्तकालय

पुस्तकालय वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिए भी ज्ञान की सामग्री के वृहत् भंडार होते हैं। सदियों पुरानी बहुमूल्य पुस्तकों और पांडुलिपियों तथा साथ ही आधुनिक मुद्रित सामग्री को जनता के उपयोग के लिए पुस्तकालयों में रखा जाता है। पुस्तकालय का एक कार्य लोगों विशेषतः विद्यार्थियों तथा युवाओं में पढ़ने की आदत डालना भी है। ये बहुमूल्य पुस्तकें और पांडुलिपियाँ, जिन्हें बनाने में वर्षों लगे हैं, को आगामी पीढ़ियों के लिए परिरक्षित और संरक्षित किया जाना है क्योंकि ये हमारी सांस्कृतिक विरासत का भाग है। मंत्रालय के प्रमुख पुस्तकालय इस प्रकार हैं :

राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान

राजा राम मोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान (आर आर आर एल एफ) संस्कृति मंत्रालय के तहत् एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना इस महान राजा की द्विशताब्दी जयंती के अवसर पर मई 1972 में की गई थी , जो पुनर्जागरण और आधुनिक काल में अग्रणी रहे तथा जिन्होंने हमारे देश में शिक्षा के प्रचार के लिए अत्यधिक कार्य किया। इस प्रतिष्ठान का मुख्य उद्देश्य राज्य पुस्तकालय प्राधिकरणों, संघ राज्य क्षेत्रों और पुस्तकालय सेवाओं के क्षेत्र में कार्य कर रहे स्वैच्छिक संगठनों के सक्रिय सहयोग के साथ विशेष रूप सेग्रामीण क्षेत्रों मेंपढ़ने की आदत को लोकप्रिय बनाकर और पर्याप्त पुस्तकालय सेवाएं देकर देश में सार्वजनिक पुस्तकालय को सहायता तथा बढ़ावा देना हैं। अपने सीमित संसाधनों के साथ आर.आर.एल.एफ. दो प्रकार की योजनाओं–मैचिंग एंव नॉन मैचिंग के कार्यान्वयन के साथ पूरे देश में पुस्तकालय सेवाओं का विकास तथा पुस्ताकलय अभियान को बढ़ावा दे रहा है। वर्ष 2010–11 के दौरान प्रतिष्ठान द्वारा मैचिंग तथा नॉन मैचिंग योजनाओं के अंर्तगत पूरे देश में 13000 से अधिक पुस्तकालयों के लगभग 45.00 करोड़ रू0 की सहायता दी गई। इसके अतिरिक्त आर.आर.एल.एफ ने पुस्तकालय में राजभाषा के रूप में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय केद्रं, नई दिल्ली में 13 वें कंवीनर्स सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके उपरांत ''फ्यूचर्स ऑफ बुक्स इन दा 21 सैंचरी'' शीर्षक पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। विज्ञान केद्रं, कोलकाता में डिजीटल पुस्तक प्रबंधन (आईसीडीएलएम–2011) पर एक अंर्तराष्ट्रीय सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) पूरे देश में स्थित 12000 से अधिक पुस्तकालयों की प्रतिष्ठान द्वारा लगभग 41.90 करोड़ की सहायता प्रदान की गई। रवीन्द्र नाथ टैगोर की 150 वीं जयंती के अवसर पर आर आर एल एफ ने विज्ञान भवन, नई दिल्ली में ''टैगौर यूनिवर्सिलिज़म इंडिविजूएल एण्ड द यूनिवर्स '' पर एक अंर्तराष्ट्रीय सम्मेलन का आयेाजन किया जिसका शुंभारंभ सचिव (संस्कृति) द्वारा किया गया। 2 अगस्त 2011 को विज्ञान केद्रं कोलकाता के मिनी आडिटोरियम में एन सी.एस. एम. के सहयोग से प्रतिष्ठान द्वारा मानव कल्याण में रसायन विज्ञान पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। समीक्षाधीन अवधि के दौरान प्रतिष्ठान ने वैबसाईट पर टैगोर

की पुस्तक सूची का भी आंरभ किया तथा सार्वजनिक पुस्तकालय पेशेवरों के लिए कौशल विकास प्राशिक्षण कार्यक्रम तथा रवीन्द्र नाट्यन परियोजना भीष्शुरू की। मंत्रालय आर आर एल एफ के निष्पादन तथा कार्यकलापों की निरंतर निगरानी करता रहा है।

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी की स्थापना 1951 में दिल्ली में प्रायोगिक पुस्तकालय परियोजना के तहत की गई थी। लाइब्रेरी का मुख्य उद्देश्य दिल्ली के लोगों को सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा तथा लोकप्रिय शिक्षा के लिए एक सामुदायिक केन्द्र प्रदान करना है जो भारत में सभी सार्वजनिक पुस्तकालय विकास हेतु माडल का कार्य कर सके और पड़ोसी देशों को सलाहकार संबंधी सेवाएं प्रदान कर सके। दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी का केन्द्रीय पुस्तकालय, क्षेत्रीय पुस्तकालय, 3 शाखा पुस्तकालयों, 24 उप शाखा पुस्तकालयों, 11 पुनर्वास कालोनी पुस्तकालयों, 3 सामुदायिक पुस्तकालयों, दृष्टिहीनों के लिए एक ब्रेल पुस्तकालय, 70 सचल सेवा स्थलों तथा राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में 22 डिपाजिट स्टेशनों का विशाल नेटवर्क है। वर्ष 2010–11 के दौरान डी.पी.एल. ने डी.वी. एक्ट 1944 के अंर्तगत सभी भारतीय भाषाओं में 2,30,172 पुस्तकें प्राप्त की तथा पुस्तकालय में लगभग 16 लाख पुस्तकों का संग्रह हैं। इसने आंतरिक कार्यकलापों के स्वचालन में तेज़ी लाने के लिए कोहा ओपन सोर्स डंटिग्रेटिड लाइब्रेरी मैनेंजमैंट सॉफ्टवेयर (आई.एल.एम.एस.) का भी कार्यान्वयन किया। इस अवधि के दौरान डी.पी.एल. ने विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें सरोजनी नगर दिल्ली में यूनेस्को के सहयोग के साथ दिल्ली के स्कूली बच्चों के लिए कथा वाचन सत्र, ''डी.पी.एल. रिवाईडंस'' पर प्रदशर्नी का आयोजन इत्यादि शामिल है। वर्ष2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) इसका संग्रह 16, लाख पुस्तकों तक बढ़ गया और सभी भारतीय भाषाओं में डी बी एक्ट 1954 के अंर्तगत लगभग 3 लाख पुस्तकें प्राप्त की। डी.पी.एल. ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान विभिन्न शैक्षिक एंव सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जिसमें इलैक्ट्रॉनिक युग में कॉपी–राइट एक्ट तथा पुस्तकों की चुनौतियां पर कार्यशाला, सरोजनी नगर नई दिल्ली में बच्चों के लिए फ़िल्मशो इत्यादि शामिल है। रवीन्द्र नाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर प्रतियोगिता और समापन उत्सव इत्यादि का आयोजन किया गया। मंत्रालय द्वारा डी.पी.एल. के कार्यकरण का निरन्तर अध्ययन किया गया है तथा समय–समय पर मूल्यांकन किया गया।

अभिलेखीय पुस्तकालय

एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता

1984 में भारत सरकार ने संसद के अधिनियम द्वारा एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता को राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया है। अब एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। इसका मुख्य उद्येश्य भाषा, साहित्य, संस्कृति तथा सामाजिक आर्थिक पहलुओं के संबंध में अनुसांधान परियोजनाएं शुरू करना है। यह संस्थान इस उप महाद्वीप में कलात्मक तथा बौद्धिक, दोनों ही संस्कृति की सामग्रियों का सबसे पुराना भंडार है। इसमें हिन्दू तथा मुस्लिम कालों की दुर्लभ तथा बहुमूल्य पुस्तकों, प्राचीन पांडुलिपियों, तैल चित्रों, सिक्कों आदि का विशाल संग्रह है। सोसायटी का पुस्तकालय तंत्र के विकास, संग्रहालय और इसकी उपभोक्ता सुविधाओं के विकास, अनुसंधान संवर्धन तथा प्रकाशन से संबंधित कार्यक्रम हैं। यह संस्थान पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनुसंधान परियोजनाएं भी चलाता है। वर्ष 2010–11 के दौरान एशियाटिक सोसाइटी ने पूर्वोत्तर में 2 कार्यशालाओं सहित 5 राष्ट्रीय सेमिनारों, 32 व्याख्यानों 3 प्रदर्शनियों इत्यादि का आयोजन किया। वर्ष के दौरान इसने 14 बाहरी परियोजनााओं सहित 26 अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की, तथा 7 पुस्तकें, पुस्तकों के 7 रिप्रिंट, 4 पत्रिकाओं, 8 पुस्तिकाओं तथा 10 बुलेटिन निकाले। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसम्बर 2011 तक) सोसायटी ने 16 बाहरी शोध परियोजनाओं सहित 32 परियोजनाएं शुरु की तथा इस अवधि के दौरान 7 सेमिनारों, 20 व्याख्यानों तथा 3 कार्यशालाओं का भी आयोजन किया। दिसम्बर 2011 तक एशियाटिक सोसाइटी ने रिप्रिंट सहित 8 पुस्तकें, 3 पत्रिकाएं, 7 मासिक बुलेटिन तथा 4 पुस्तिकाएं निकालीं। गत कुछेक वर्षो में संस्कृति मंत्रालय द्वारा योसायटी के निश्पादन की समीक्षा करने से यह पता चला कि एशियाटिक सोसायटी ऐसे शिक्षाविदों, अनुसन्धान–अध्येताओं तथा आम जनता जो दुर्लभ–पाण्डुलिपियों, पुस्तकों तथा चित्रों में रूचि रखते हैं, को बहुमूल्य सेवाएं प्रदान करती आ रही है।

खुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना

खुदा बख़्श ओरियंटल पब्लिक लाइब्रेरी, पटना संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। दिसम्बर, 1969 में इसे संसद के अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया और जुलाई, 1970 से इसने भारत सरकार द्वारा गठित बोर्ड द्वारा शासित एवं स्वायत्त संस्थान के रूप में कार्य किया है। इसमें पत्रिकाओं सहित विभिन्न 21,000 पांडुलिपियाँ तथा 2,80,000 से अधिक मुद्रित पुस्तकें और मुगल, राजपूत औध, ईरान तथा टर्की स्कूलों के लगभग 2000 मूल पेन्टिग्स का समृद्ध संग्रह हैं। वर्ष 2010–11 के दौरान 5369 पुस्तके तथा 10 पाण्डुलिपियां तथा उपहार एंव आदान –प्रदान से 507 पुस्तकों को अधिग्रहित किया गया। इसके अतिरिक्त लगभग 8656 प्रत्रिकाओं के अंक तथा 291 समाचार पत्रों को अधिगृहीत किया गया। वर्ष 2010–11 के दौरान लगभग 47 आडियो तथा 26 विडियों कैसेट को तैयार किया गया। लगभग 2165 पाण्डुलिपियों/पुस्तकों का धूमीकरण किया गया तथा 32458 पाण्डुलिपियां/पुस्तकों के फोलियों तैयार किऐ गए और उनका उपचारात्मक परीक्षण किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) पुस्तकालय ने 5122 पुस्तकों नौ पाण्डुलिपियों, 250 ई–पुस्तकों एंव एक सी डी खरीद द्वारा अधिग्रहित की और उपहार एंव आदान–प्रदान में 573 पुस्तकें एवं 8 सी डी भी अधिग्रहित थी। पुस्तकालय ने प्रत्रिकाओं के 767 अंकों तथा 71 समाचार पत्रों की भी अधिग्रहित किया। इस अवधि के दौरान 47 आडियों और 26 वीडियों कैसेट तैयार किऐ तथा 4,68,180 फोलियो वाले डिजीटल फारमेट में 1481 पाण्डुलिपियां अब पाठकों के प्रयोग हेतु तैयार हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय ने समीक्षाधीन अवधि के दौरान व्याख्यान, सेमिनार/सांस्कृतिक कार्यक्रम/प्रदर्शनी/मुशायरा से संबधित कार्य भी किया। इस पुस्तकालय ने निष्पादन की समीक्षा करने पर मंत्रालय ने पाया कि इस पुस्तकालय को प्रदान की गई धनराशि इसकी उपलब्धियों/परिणामों के अनुरूप है।

रामपुर रज़ा पुस्तकालय

अर्तराष्ट्रीय रूप से प्रसिद्ध (रामपुर रज़ा पुस्तकालय 1774 में रामपुर स्टेट के नवाब फैजुल्ला ख़ान द्वारा बनाया गया था। इस पुस्तकालय को सन् 1975 में भारत सरकार द्वारा अपने नियंत्रण में ले लिया गया था। यह संस्कृति मंत्रालय के अंर्तगत रामपुर रज़ा पुस्तकालय बोर्ड द्वारा चलाया जा रहा है जिसके अध्यक्ष उत्तर प्रेदश के राज्यपाल हैं। इसमें 150 सचित्र पाण्डुलिपियों सहित 17000 पाण्डुलिपियों, 205 ताणपत्र पाण्डुलिपियाँ, 5000 लधु चित्र, 3000 इस्लाम सुलेख के नमूने तथा 60,000 दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों का संग्रह है। इस पुस्तकालय में पुरातत्व, भाषायी एंव लिपियों का संग्रह है जैसे अरबी, फारसी, संस्कृत, हिन्दी उर्दू, तुर्की तथा पश्तों इत्यादि। ये विभिन्न विषयों जैसे इतिहास, दर्शनशास्त्र, ख्गोल विज्ञान, खगोल मिति, गणित, चिकित्सा भौतिक विज्ञान, सूफ़ीवाद, साहित्य, कला, और वास्तुकला, से सबंधित है। लधु चित्र तुर्क मंगोल, मुग़ल, फारसी, राजपूत, पहाड़ी अवध, दकड्डनि और भारत यूरोपीय स्कूल को दर्शाती है जिनके नमुने अभी तक प्रकाशित नहीं किऐ गऐ है। इस पुस्तकालय ने विभिन्न भाषाओं में 140 पुस्तकें प्रकाशित की है और शिक्षाविदों के लिए अपनी स्वंय की वैबसाईट भी शुरू की है। यह पुस्तकालय विरासत महल नामतः हामिद मंजिल में स्थित है जो कि 100 से अधिक साल पुराना है और जिसका भारत यूरोपीय शैली का भव्य वास्तुशिल्प उत्तर भारत में अद्वितीय है, और यह 17वीं एवं 18वीं शताब्दी की इतालवी मार्बल मूर्तियों से सुसज्जित है। इसकी दिवारों, धरती तथा कार्निसो'' पर प्लास्टर ऑफ पेरिस पर सोने की परत चढ़ाई गई है। वर्ष 2010–11 के दौरान पुस्तकालय का संग्रह 843 पुस्तकों, 1461 पत्रिकाओं और 6678 समाचार पत्रों द्वारा समृद्ध बना और इनकी जिल्दसाजी की गई। 470 से अधिक पुस्तकों को वर्गीकृत किया गया और 475 कैटलॉग कार्ड बनाए गए। पुस्तकालय के संग्रह को पाण्डुलिपियों से 1,90,000 चित्रों का डिजीटलीकरण किया गया। पुस्तकालय ने 10 पुस्तकें निकाली और 1764 रंगीन फोटो, 3 सीडी एंव पांच डी वी डी तैयार किए। उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, हिन्दी की 425 पुस्तकों के संबंध में पुस्तक सूची की जानकारी को कंप्यूटरीकृत किया गया। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय ने दुर्लभ पाण्डुलिपियों की प्रदर्शनी, परिक्षण कार्यशालाओं, पुरस्कार, समारोह, मेलों इत्यादि सहित विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों/कार्यक्रमों का भी आयोजन किया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) पुस्तकालय ने संग्रह में 410 पुस्तकें 892 पत्रिकाऐं एवं 4024 समाचार पत्र अधिगृहीत किए। इस

अवधि के दौरान 2084 रंगीन फोटो, 25 सी डी और 50 डी वी डी भी तैयार किए। शिक्षाविदों की सेवाएं देने के अपने कार्यक्रम के अंर्तगत 100 शोध शिक्षाविदों से परामर्श लिया गया, 250 पाण्डुलिपियां, 835 पाठकों को ज़ारी की गई, 2555 पुस्तकें मुद्रित की गई और दरबार हॉल में पुस्तकालय संग्रहालय का बड़ी संख्या में लोगों द्वारा दौरा किया गया। इसके अतिरिक्त सामाचार पत्र पत्रिकाओं के लिए पठन कक्ष में 13491 पाठक आए। इसके अलावा पुस्तकालय के 932 प्रकाशन या तो बेचे गऐ अथवा शिक्षविदों को उपहार स्वरूप दिए गए। इस अवधि के दौरान 4 वरिष्ठ और 2 कनिष्ठ छात्रवृत्तियाँ दी गईं । गत दो वर्षों के दौरान मंत्रालय द्वारा की गई समीक्षाओं से यह मूल्यांकन हुआ कि यह पुस्तकालय इस सौपें गए कार्य को करने में सफल रहा है।

मानव विज्ञान

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई जी आर एम एस), भोपाल

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (आई जी आर एम एस) संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय है जो समय और स्थान में मनुष्य की कहानी को चित्रित करने के प्रति समर्पित है। आई जी आर एम एस भारत में एक नए संग्रहालय अभियान का सृजन करने से जुड़ा है जो प्रयत्न के लिए मानव संस्कृतियों की वैधता और बहुलकता को प्रदर्शित करता है। आई जी आर एम एस का मुख्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश में स्थित है जबकि इसका एक क्षेत्रीय केंद्रं मैसूर (कर्नाटक) में कार्य कर रहा है। आई जी आर एम एस का तीन उपयोजनाओं नामतः (क) अवसंरचना विकास (संग्रहालय परिसर का विकास), (ख) शिक्षा और आऊटरीच, और (ग) ऑपरेश्न सॉल्वेज के साथ ज़ारी व्यापक योजना के रूप में विकसित किया जा रहा है। अन्य ष्शब्दों में आई जी आर एम एस शिक्षा और आऊटरीच गतिविधियों के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक जीवन की एकता और विविधता का बचाव, परिरक्षण और संरक्षण करने के लिए अपनी भौतिक अवसंरचना का विकास करता है। वर्ष 2010–11 के दौरान संग्रहालय ने अपने संग्रह में लगभग 86 एथनोग्राफिक नमूनों, 1742 स्लाइड/फोटो प्रिंट, लगभग 630 घण्टों की आडियो/विडियो रिकार्डिंग/भारतीय/विदेशी पत्रिकाओं के 510 अंक और 365 पुस्तकें जोड़ी। शिक्षा और आऊटरीच कार्यकलापों के

अंर्तगत इसने उड़ीसा के पांरपरिक ऐपलिक कला, भोपाल की ज़रदोसी कला, राजस्थान की कुम्हारी, पश्चिम बंगाल के शोला क्रॉफ्ट, उड़ीसा की पारंपरिक टेराकोटा इत्यादि पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया । वर्ष के दौरान, इंडोर गैलेरी कॉम्पलेक्स वीथी संकुल के निकट प्रदर्श के रूप मेंमणिपुर की कोम जनजाति, असम के देवरी, राभा, हजोंग और मोरान समुदायों के पारम्परिक हाउस टाइपों को बनाया गया। समय प्रंबधन की पारम्परिक तकनीक पर आधारित नए प्रदर्श। मणिपुर से 'तानयेशेगं ' और लोह प्रगलन 'योत्सुंग योत्सा' को पारम्परिक प्रौद्योगिकी खुली प्रदर्शनी में शामिल किया गया। वर्ष 2011–12 (दिसंबर, 2011 तक) के दौरान, उत्तराखण्ड के भोटिया समुदाय तथा मेद्यालय के गारो समुदाय के पारम्परिक हाउस टाइप के दो प्रदर्शों को क्रमशः हिमालयी ग्राम और जनजातीय आवास खुली प्रदर्शनी में शामिल किया गया। संग्रहालय ने देश के विभिन्न राज्यों को ष्शामिल करते हुए 15 अस्थायी एवं भ्रमणशील प्रदर्शनियों को विकसित और ष्शुरू किया है। इसने लगभग 1650 नृजाति–वर्णन संबंधी नमूनों, 2317 स्लाइड्स/फोटो प्रिंटं, 623 भारतीय/विदेशी जरनल खण्डों तथा 466 लाइब्रेरी पुस्तकों को अपने संग्रह में जोड़ा है। समीक्षाधीन अवधि के दौरान, संग्रहालय ने विभिन्न शैक्षणिक और सांस्कृतिक प्रसार कार्यकलापों का संचालन किया है। मंत्रालय ने इस संग्रहालय के कार्यकरण की निरन्तर समीक्षा की है और आई जी आर एम एस के कार्य निष्पादन को इसकी स्थापना के उद्येश्यों के अनुरूप पाया है।

बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन विकास संस्थान

बौद्ध एवं तिब्बती अध्ययन के विकास हेतु संस्कृति मंत्रालय के तीन स्वायत्त संस्थान नामतः केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह, केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान, सारनाथ, वाराणसी और नव नालंदा महाविहार, बिहार हैं। ये संस्थान अपने शैक्षिक, अनुसंधान कार्यक्रमों तथा अन्य सम्बद्ध कार्यकलापों/कार्यक्रमों के माध्यम से बौद्ध/तिब्बती तथा पाली अध्ययनों के विकास को बढ़ावा देते हैं।

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (सी आई बी एस), लेह

यह संस्थान लद्दाख, जो मूलतः बौद्ध स्थल भी है, में बौद्ध संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। लद्दाख का क्षेत्र चीन और पाकिस्तान की सीमाओं से लगता है और इसीलिए यह न केवल सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु संवेदनशील भी है। सी आई बी एस का मुख्य उद्देश्य आधुनिक विषयों की जानकारी के साथ बौद्ध विचारों, साहित्य तथा कलाओं की जानकारी पैदा करके विद्यार्थियों के बहुआयामी व्यक्तित्व का विकास करना है। संस्थान का मुख्य बल भोति (तिब्बती) भाषा में बौद्ध दर्शन पढ़ाने का है, तथापि, विद्यार्थियों के ज्ञान क्षितिज को बढ़ाने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए अन्य विषय जैसे – हिंदी, अंग्रेजी, सामान्य विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, गणित, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान तथा इतिहास भी पढ़ाए जाते हैं। इसके अलावा, क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए आमची (भोत चिकित्सा), तिब्बती स्क्रोल पेंटिंग, मूर्तिकला और नक्काशी में रूचि रखने वाले छात्रों के लिए छह वर्षीय पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। संस्थान का पुस्तकालय भोति, संस्कृत, पाली आदि भाषाओं सहित विभिन्न भाषाओं में 28,500 पुस्तकों के संग्रह के साथ पूरे बौद्ध हिमालयी क्षेत्र में एक सर्वोत्तम पुस्तकालय है। चारदीवारी, पहुँच और आंतरिक सड़क, अकादमिक भवन पुस्तकालय भवन, प्रशासनिक खण्ड, 100 छात्रों की क्षमता वाले तीन हॉस्टल, क्रीड़ा स्थल तथा प्रवेश द्वार के निर्माण कार्य को पहले ही पूरा किया जा चुका है। सभागार का निर्माण कार्य तथा स्थल विकास कार्य प्रगति पर है। इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखने के अतिरिक्त यह संस्थान सोवा रिग्या (भोत चिकित्सा) में पाठ्यक्रम भी प्रदान करता है। वर्ष 2010–11 के दौरान पुराने परिसर में माध्यमिक शिक्षा के मध्य चरण में संस्थान में 307 विद्यार्थी और नए परिसर में पूर्व मध्य से आचार्य (स्नातकोत्तर के समकक्ष) कक्षा में 342 विद्यार्थी पढ़ रहे थे। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सीआईबीएस विभिन्न मठों/विहारों में 50 गोन्पा/मठ विद्यालयों को चला रहा है। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने सीआईबीएस को लद्दाख क्षेत्र के लिए पाण्डुलिपि स्रोत केन्द्र तथा पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र के रूप में चुना है। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक), पुरावस्तुओं तथा अन्य कला कृतियों के उत्तम संग्रह के साथ संस्थान ने एक सीमित पुरातत्व संग्रहालय तैयार किया है। इसने 2 संगोष्ठियों – भारतीय संस्कृति में बौद्ध परंपरा के योगदान पर एक चार दिवसीय संगोष्ठी और आईसीसीआर के सहयोग के साथ 'कश्मीर में बौद्ध धर्म' पर एक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय

बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसने अब तक 60 दुर्लभ एवं मूल्यवान पुस्तकों का प्रकाशन किया है जिन्हें बिना लाभ, बिना हानि आधार पर बेचा जा रहा है। इसने 'लद्दाख प्रभाग 13' और 'लद्दाख प्रभा 14' शीर्षक से 2 पुस्तकें प्रकाशित की हैं और हिमालयी बौद्ध संस्कृति के विश्वकोश के संकलन का कार्य प्रगति पर है। केन्द्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान के कार्यकरण की मंत्रालय द्वारा समय-समय पर समीक्षा की जाती रही है और यह पाया गया है कि संस्थान बौद्ध संस्कृति और अध्ययन के संवर्धन की दिशा में अत्यधिक योगदान दे रहा है।

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी यू टी एस) सारनाथ, वाराणसी

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक स्वायत्तशासी संगठन के रूप में कार्य करने वाले केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय (सी यू टी एस) सारनाथ, वाराणसी को तिब्बती संस्कृति के परिरक्षण के लिए एक केन्द्रीय संगठन के रूप में भारत सरकार द्वारा वर्ष 1967 में स्थापित किया गया था। आरंभ में इसने संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के घटक विंग के रूप में कार्य किया और वर्ष 1977 में यह स्वायत्तशासी संगठन बना। बाद में 5 अप्रैल, 1988 को इसे मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया गया। अब यह संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्ण रूप से वित्तपोषित एक स्वायत्तशासी संगठन है। तिब्बती संस्कृति और तिब्बती भाषा में संरक्षित प्राचीन भारतीय विज्ञान और साहित्य, जिसका मूल लुप्त हो गया है, का परिरक्षण करना, भारतीय हिमालय सीमा क्षेत्र के उन छात्रों को वैकल्पिक शैक्षिक सुविधा प्रदान करना जिन्होंने पहले तिब्बत में उच्चतर शिक्षा प्राप्त की है और तिब्बती अध्ययन में उपाधियां प्रदान करने के प्रावधान के साथ शिक्षा के कार्य क्षेत्र को सम्पादित करना इसके लक्ष्य हैं। अपने उद्देश्यों के अनुसरण में, अध्ययन के समयबद्ध पाठ्यक्रम, लिखित परीक्षा और उपाधि प्रदान करने से मिलकर बने आधुनिक विश्वविद्यालयों के ढाँचे के भीतर पारंपरिक तिब्बती शिक्षण पद्धतियों के प्रति झुकाव के साथ तिब्बती अध्ययन में यह विश्वविद्यालय विगत 44 वर्षों से शिक्षा प्रदान कर रहा है। वर्ष 2010-11 के दौरान, लगभग 3410 पुस्तकें खरीदी गईं और 42 अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जरनलों की सदस्यता प्राप्त की गई। सीयूटीएस के अंतर्गत परिरक्षण/अनुवाद, शब्दकोश और दुर्लभ बौद्ध पुस्तक अनुसंधान विभाग के अनुसंधान अध्येताओं ने विभिन्न बौद्ध पुस्तकों/पाण्डुलिपियों आदि पर महत्वपूर्ण संपादन/अनुवाद/ कार्य करते हुए प्रोजेक्टों को शुरू किया है। इसके अतिरिक्त सीयूटीएस ने बौद्ध दर्शन, पुस्तकों, पाण्डुलिपियों आदि

पर बहुत सी संगोष्ठियों, सम्मेलनों/कार्यशालाओं तथा प्रदर्शनियों को आयोजित किया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर 2011 तक) संस्थान द्वारा 10 शोध कार्यों को शुरू किया गया और 4 प्रोजेक्टों के अनुवाद कार्य को पूरा किया गया। दुलर्भ बौद्ध पुस्तक अनुसंधान इकाई के अंतर्गत (i) 'धीह' अनुसंधान जरनल के 51वें अंक के प्रकाशन (ii) संपुतंत्र, गुह्यसमजप्रतिप्रोद्भोतन/ततनागरुयश्चयोगाथा/आद्यबज्राकृत और (iii) बोधतोसंग्रह से संबंधित कार्य प्रगति पर हैं। सीयूटीएस के शब्दकोश एकक के अंतर्गत विभिन्न प्रोजेक्टों के लिए समीक्षाधीन अवधि के दौरान 6 प्रोजेक्ट को शुरू किया गया। पुस्तकालय ने 42 जरनलों का प्राप्त किया और स्वर्गीय प्रो. जगन्नाथ उपाध्याय के पूर्वजों द्वारा दान दी गई 2741 पुस्तकों को प्राप्त किया गया और इन्हें पुस्तकालय में शामिल किया गया। इसने दिसंबर 2011 तक 7 पुस्तकें प्रकाशित की और 34 संगोष्ठियां/संम्मेलन/कार्यशालाएं/प्रदर्शनियां भी आयोजित कीं। मंत्रालय द्वारा समय–समय पर संस्थान के कार्यकरण की समीक्षा की गई और यह पाया गया कि संस्थान वही कार्य कर रहा है जिसके लिए इसकी स्थापना की गई है।

नव नालंदा महाविहार, बिहार

नव नालंदा महाविहार (एनएनएम) को बिहार सरकार द्वारा पाली और बौद्ध अध्ययन में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान के एक केन्द्र के रूप में 20 नवंबर, 1951 को स्थापित किया गया था। प्राचीन नालंदा महाविहार की तर्ज पर पाली और बौद्ध धर्म में उच्चतर शिक्षा के केन्द्र को विकसित करना महाविहार की स्थापना के पीछे प्रेरणा रही। संस्कृति विभाग, एमएचआरडी, भारत सरकार ने वर्ष 1994 में एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में इस महाविहार को अपने प्रशासनिक नियंत्रण में ले लिया। 13 नवंबर, 2006 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नव नालंदा महाविहार को मानित विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। एनएनएम स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर उच्च स्तर के पाली और बौद्ध अध्ययन पर आधारित नवोन्मेषी शिक्षण एवं अनुसंधान के लिए प्रतिबद्ध है। यह न केवल अपने विद्यार्थियों में सामाजिक और व्यापारिक कौशलों का विकास करता है बल्कि यह इनमें मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक श्रेष्ठता पैदा करता है। वर्ष 2010–11 के दौरान, एनएनएम की लाइब्रेरी में 3375 पुस्तकें ष्शामिल की गईं और अब इसका संग्रह इसके पास उपलब्ध कुछ दुर्लभ पांडुलिपियों के अतिरिक्त 57300 हो गया है। एनएनएम द्वारा विशेष व्याख्यानों, अंतर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी सम्मेलनों, 'कवि सम्मेलनों', कार्यशालाओं, स्थापना दिवस

समारोह आदि सहित लगभग 17 कार्यक्रम आयोजित किए गए। वर्ष 2011–12 (दिसंबर 2011 तक) एनएनएम ने अपने संग्रह में 2700 पुस्तकें जोड़ी हैं। अब इसका कुल संग्रह बहुत सी काष्ठ चित्रीय तिब्बती पाण्डुलिपियों और निःशुल्क पुस्तकों के साथ कुछ दुर्लभ पाण्डुलिपियों सहित 60000 पुस्तकों का हो गया है। इसने वर्ष के दौरान 3 विशेष प्रोजेक्ट शुरू किए हैं नामतः पाली–हिंदी ष्शब्दकोश, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र (एमआरपी), नालंदा के अंतर्गत पाण्डुलिपियों का प्रलेखन और बिहार में प्राचीन बौद्ध तीर्थ स्थान का पुनरुद्धार। इसने बहुत से महत्वपूर्ण कार्यक्रमों अर्थात गुरू रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती के अवसर पर विशेष व्याख्यान, विश्व पर्यटन दिवस, महा पवरन अभिधम्म दिवस उत्सव, स्थापना दिवस आदि को भी आयोजित किया। मंत्रालय द्वारा समय–समय पर संस्थान के कार्यकरण की समीक्षा की गई है और यह पाया गया है कि संस्थान ने रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान प्रभावी ढंग से कार्य किया है।

स्मारक/शताब्दी संस्थान/संगठन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का राष्ट्रीय स्मारक है। इसकी स्थापना 18 सितंबर, 1984 को गांधी स्मृति समिति (1971 मे स्थापित) और गांधी दर्शन अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी, राजघाट (1969 में स्थापित) को मिलाकर की गई थी। गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन के मुख्य उद्देश्यों में दोनों परिसर का परिरक्षण, अनुरक्षण तथा रख–रखाव और विभिन्न सामाजिक,ष्शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम को आयोजित करके महात्मा गांधी के जीवन, उद्देश्य और विचारों का प्रसार करना ष्शामिल है। जीएसडीएस सार्थक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में गांधीवादी मूल्यों के प्रसार को बहुत महत्व देती है। वर्ष 2010–11 के दौरान, जीएसडीएस ने गांधी स्मृति में फोटो प्रदर्शनी का पुनर्सज्जीकरण किया। नोखाली गांधी आश्रम, बांग्लादेश के सहयोग के साथ समिति द्वारा आज के विश्व में शांति और अहिंसा के गांधीवादी संदेश के महत्व पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। विभिन्न सहयोगी कार्यक्रम के अलावा, समिति ने नोखाली में एक वृहत पुस्तकालय और प्रलेखीकरण केन्द्र स्थापित किया है। जीएसडीएस, आईसीएसएसआर और आईसीपीआर के सहयोग के साथ एनसीआरआई द्वारा नई तालीम के पुनर्बलन, अभिसरण एवं कार्यान्वयन पर राष्ट्रीय कन्वेशन का आयोजन किया गया। वर्ष के दौरान, इसने विभिन्न कार्यशालाओं,

प्रशिक्षण कार्यक्रमों, चित्रकला प्रतियोगिताओं, कठपुतली नाटक, युवा कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया। वर्ष 2011–12 की अवधि के दौरान (दिसंबर 2011 तक) गुरू देव रबीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती मनाने के अवसर पर जीएसडीएस ने 3 नाटकों नामतः डाक घर, चुट्टी और ताहेर देश का मंचन किया। भूदान आंदोलन की 60वीं वर्षगांठ मनाने के लिए इसने भूमि से जुड़े समसामयिक मुद्दों पर राट्रीय सम्मेलनों और 23–25 नवंबर, 2011 के दौरान 3 दिवसीय आदिवासी संस्कृति संगम का भी आयोजन किया जिसमें 19 राज्यों से लगभग 700 आदिवासियों ने भाग लिया। जीएसडीएस ने समीक्षाधीनअवधि के दौरान गांधी ग्रीष्म स्कूल (बच्चों के लिए), कार्यशालाओं, युवा शिविरों, अन्तरराट्रीय युवा ष्शांति उत्सव, व्याख्यानों, विचार–विमर्शों, सगोष्ठियों प्रकाशनों आदि सहित अपने नियमित कार्यकलापों को जारी करना है। जी एस डी एस के कार्यकरण मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की गई और इसे संतोषजनक पाया गया।

<u>नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय (एन एम एम एल)</u>

नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय आधुनिक भारतीय इतिहास का एक प्रमुख अनुसंधान केन्द्र है। एन एम एम एल पंडित जवाहर लाल नेहरू के जीवन और काल पर निजी वस्तुओं का एक संग्रहालय है। इसमें आधुनिक भारत और सम्बद्धविषयों पर विशेष बल के साथ पुस्तकें, पत्रिकाएं, समाचार–पत्र तथा फोटोग्राफ है और साथ ही इसमें ऐतिहासिक दस्तावेजों तथा अभिलेखों की माइक्रोफिल्म तैयार करने का एक रेप्रोग्राफी प्रभाग, एक पांडुलिपि मिशन तथा एक मौखिक इतिहास प्रभाग ओर एक अनुसंधान एवं प्रकाशन प्रभाग है। यह संग्रहालय दृश्य संचार के माध्यम से भारत में स्वतंत्रता आंदोलन की जानकारी प्रदान करता है। एन एम एम एल ने भारत में राष्ट्रवाद सहित विभिन्न विषयों पर सेमिनार तथा व्याख्यान आयोजित किए। नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय में देश और विदेशों से दर्शक आए। वर्ष 2010–11 में, एन एम एम एल ने मुख्यरूप से आधुनिक भारतीय इतिहास और सामाजिक विज्ञानों पर 4233 प्रकाशनों को अपनी लाइब्रेरी में शामिल किया है जिससे इसका कुल संग्रह 255418 प्रकाशनों का हो गया है। 8750 फोटोग्राफ, 50 सी डी, 242 डी वी डी 178 माइक्रो फिल्में और 47 फोटो एल्बम भी पुस्तकालय से जुड़ने वाली महत्वपूर्ण वस्तुएं रहीं। इसके अलावा, एन एम एम एल द्वारा 3835 लाइब्रेरी पुस्तकों वगीकृत और सूचीबद्ध किया गया, 21630 फोटोग्राफो को अंकीकृत किया गया और 499 जरनलों और 26 समाचार पत्रों को

प्राप्त किया गया। विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक विषयों पर 10 प्रस्तुतीकरण किए गए। इसने चीन में 17वें बीजिंग अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। वर्ष के दौरान, नेहरू तारामण्डल को पुनर्सज्जित किया गया और डा.करण सिंह, अध्यक्ष द्वारा उद्घाटन किया गया। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर, 2011 तक) इस अवधि के दौरान 18,50,690 आगन्तुक सग्रंहालय को देखने आए। भारत और विदेश से बहुत से प्रतिष्ठित आगन्तुक के यहां आने का भी इसे सुअवसर प्राप्त हुआ। संग्रहालय स्मारिका विक्रय स्थल से जवाहर लाल नेहरू और अन्य राष्ट्रीय नेताओं से जुड़ी 5,09,667 रू की कीमत की पुस्तकें, डी वी डी, सी डी, फोटो ग्राफ और अन्य साहित्य को बेचा गया। पुस्तकालय ने 2271 पुकाशन को जोड़ा है जिससे इसके प्रकाशनों की कुल संख्या 258554 हो गई है। अन्य जोड़ी गई महत्वपूर्ण वस्तुओं में जवाहरलाल नेहरू (1963) और इंदिरा गांधी (1970–1976) से जुड़े 5,533 फोटोग्राफ ष्शामिल हैं। पुस्तकालय ने 493 जरनल प्राप्त किए और 25 समाचार पत्रों की सदस्यता भी प्राप्त की तथा इसने 3610 पुस्तकों को वर्गीकृत और सूचीबद्ध किया। सी राजागोपालचारी (1923–25) के चुनिंदा कार्यों के तीसरे खण्ड की व्याख्या के लिए जानकारी एकत्रित करने से संबंधित शोध कार्य किए गया और जीवनी टिप्पणी को तैयार किया गया और इसे सामग्री में जोड़ा गया। मंत्रालय द्वारा नियमित रूप से संस्थान के कार्य करण की समीक्षा की गई और इसे रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान काफी प्रभावपूर्ण पाया गया है।

मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता

1993 में स्थापित मौलाना अबुल कलाम एशियाई अध्ययन संस्थान, कोलकाता भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित पोषित एक स्वायतत संगठन है। यह संस्थान मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन और कृतियों के अनुसंधान और प्रशिक्षण का एक केन्द्र है, जिसमें 19 वीं शताब्दी के मध्य से सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा आर्थिक आंदोलन का अध्ययन होता है। यह संस्थान आधुनिक भारत की धर्मनिरपेक्ष परम्पराओं तथा 19 वीं ष्शताब्दी की घटनाओं के संबंध में पुस्तकों, समाचार पत्रों, फोटोग्राफों तथा समाग्री, जो जनता को अध्ययन और अनुसंधान के लिए उपलब्ध हैं, का एक पुस्तकालय चलाता है। 5, अशरफ मिस्त्री लेन, कोलकाता स्थित मौलाना के पैतृक घर का नवीकरण किया गया है और वहां आजाद स्मरणीय संग्रहालय स्थापित किया गया है। मौलाना आजाद संग्रहालय स्मरणीय वस्तुओं, फोटोग्राफों तथा वृत्तचित्र फिल्मों को संग्रह रखता है। श्री विजय सिंह

नाहर के संग्रह से संग्रहालय के लिए बहुत सी दुर्लभ पुस्तकों तथा जरनलों को प्राप्त किया गया। फिल्म प्रभाग के वृतचित्रों को प्रदर्शित करने के माध्यम से विषय में रूचि को भी बढ़ाया गया। संस्थान ने हाल ही में स्मरणीय वस्तुओं के एक संग्रह को प्रात किया है जो कि मौलाना आजाद के भतीजे स्वर्गीय नुरूद्दीन अहमद द्वारा एकत्रित किए गए उनके चाचा के साथ बिताए समय की यादों से संबंधित है। इस संग्रह में मौलाना आजाद की पुस्तकों , फोटोग्राफ तथा कपड़ो को प्राप्त कर करना शामिल है। अशरफ मिस्त्री लेन में मौजूदा संग्रह का संपूरण करने के लिए इस संग्रह को विशिष्ट नुरूद्दीन संग्रह के रूप में अर्जित किया गया है। वर्ष 2010–11 के दौरान, सस्थान के अध्येताओं द्वारा बहुत सी परियोजनाएं संचालित की गई है जिनमें से कुछ को पूरा कर लिया गया है और प्रारंभिक समीक्षा हेतु पुस्तुत किया गया है। संस्थान ने मौलाना अबुल कलाम आजाद की 122वीं जन्मशती को मनाया और जे एन यू के प्रोफेसर द्वारा आजाद स्मारक व्याख्यान दिया गया। अनुसंधान और अध्ययन के विशिष्ट क्षेत्रों पर ग्रीष्म पाठ्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियां, सम्मलेन और परिसंवादों के आयोजन सहित इसने बहुत से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया है। वर्ष 2011–12 के दौरान (दिसंबर, 2011 तक), 10 पुस्तकें और 01 जरनल प्रकाशित किया है। संस्थान ने संगोष्ठियां आयोजित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान की है। इसने 5 पुस्तकें प्रकाशित की हैं और 01 जरनल का प्रकाशन प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, दिसंबर, 2011 तक एम ए के ए आई एस द्वारा बाह्य अनुसंधान परियोजना अध्येताओं द्वारा पुस्तुत किए गए अनुसंधान पांडुलिपि का प्रकाशन ष्शुरू किया गया। संस्थान ने राष्ट्रीय/ अन्तरराष्ट्रीय संगोश्ठियों का आयोजन करने के लिए अन्य संस्थानों के साथ आयोजन/सहयोग किया है। संस्थान के कार्यकरण की मंत्रालय द्वारा समय–समय पर समीक्षा की गई और इन समीक्षाओं में यह पाया गया कि संस्थान अध्येताओं, शिक्षाविदों और आम लोगों को भी मूल्यवान सेवाएं प्रदान कर रहा है।